14.08.2020

B.A. - Part-III
Economics (Hons.), Paper-I
Foreign capital
Economic Growth and Planning

Dr. Bipin Kumar
Professor, Deptt. of Economics
R.R.S. College, Mokama.
PPU, Patna

प्रश्न: विदेशी पूँजी का अर्थ एवं महत्त्व को बतायें ?
Meaning and importance of foreign capital.

Ans: किसी भी देश के आर्थिक विकास में विदेशी पूँजी का बड़ा ही महत्त्वपूर्ण स्थान है, विशेषकर अल्पविकसित एवं विकासशील देशों में जहाँ पूँजी और साधनों की घोर कमी पायी जाती है। यह देश की आर्थिक विकास की वित्तीय आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अपर्याप्त होते हैं। ऐसे देशों में पूँजी निर्माण की दर बहुत कम होती है क्योंकि आय के अति-निम्न स्तर और निर्धनता के दुष्चक्र के फैलाव के कारण बचत में वृद्धि संभव नहीं हो पाती है। देश के आर्थिक विकास में करारोपण और सार्वजनिक ऋण की अपनी कठिनाइयाँ, खामियाँ एवं सीमाएँ हैं। देश की अर्थव्यवस्था पर विपरीत प्रभाव के कारण घाटे की वित्त व्यवस्था का सहारा भी नहीं लिया जा सकता। ऐसी गंभीर परिस्थिति में देश की अर्थव्यवस्था के निर्माण हेतु कुचक्र से बाहर निकालने का एकमात्र रास्ता विदेशी पूँजी या फिर 'विदेशी सहयोग' रह जाता है।

वास्तव में अर्द्धविकसित या विकासशील देशों में विकास की गति को बढ़ाने या तेज करने में विदेशी पूँजी काफी लाभदायक सिद्ध होता है। इस प्रकार, विकासशील देशों में, यह कम विकसित, पिछड़े हुए देशों की समस्याओं में कोई घरेलू बचतों का एक विकल्प माना जाता है। अगर आज तेजी से विकास कर रहे देशों का हम इतिहास देखें तो पता चलता है कि अतीत में ये विश्व के आधुनिक देश अपने देश की विकास गति को बढ़ाने या तीव्र करने के लिए विदेशी सहायता या पूँजी पर निर्भर रहे हैं। प्रो. डब्ल्यू. ए. लुईस के अनुसार, "लगभग सभी विकसित देशों को अपने विकास के प्रारंभिक वर्षों के दौरान अपनी कमजोरियों की सहायता हेतु विदेशी पूँजी की सहायता लेनी पड़ी थी। इंग्लैंड ने 17वीं और 18वीं शताब्दियों में हॉलैंड से ऋण लिया तथा 19वीं और 20वीं शताब्दियों में प्रत्येक कई अन्य देशों को ऋण एवं आर्थिक सहायता प्रदान किया। संयुक्त राज्य अमेरिका, जो कि आज की सबसे समृद्ध एवं विकसित राष्ट्र है, उसने भी उन्नीसवीं शताब्दी में भारी ऋण लिया एवं बदले में 20वीं शताब्दी में, सबसे बड़ा ऋणदाता देश माना जाने लगा।" — प्रो. डब्ल्यू. ए. लुईस

संयुक्त राष्ट्र संघ की रिपोर्ट के अनुसार, "विकासशील देशों में, आन्तरिक घरेलू बचतों की कम आय के कारण एक निम्न स्तर पर रहती है और [illegible] के पहले ही नीचे के स्तरों में कटौती करना असम्भव होता है। इसलिए [illegible] एक आवश्यकता बन जाती है तथा यह आवश्यकता केवल विदेशी [illegible] ही नहीं बल्कि घरेलू बचतों के लिए प्रोत्साहन का काम करती है।" — संयुक्त राष्ट्र संघ रिपोर्ट

अब हम विकासशील एवं अर्द्धविकसित देशों के विकास में विदेशी पूँजी या सहायता के प्रमुख महत्त्व को जानते हैं, जो कि [illegible] अल्पविकसित देशों के विकास में काफी [illegible] सामा[illegible]

भूमिका अदा करती है। यह कई प्रकार से, आर्थिक विकास की दर को तीव्र करने में सहायक साबित होती है। विदेशी पूंजी प्राप्त करने वाले देश को कई सुविधाएं और दुर्लभ साधन प्राप्त करने हेतु अनेक स्रोत एवं उपाय उपलब्ध करा देती है। विदेशी पूंजी विदेशी विनिमय की पूर्ति भी करती है जिससे विकासशील परियोजनाओं के लिए ही ये आवश्यक सामग्री और अन्य साधनों-सामान आयात किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त यह अन्य वस्तुओं के आयात को भी सम्भव बनाती है जिनकी विकास और राष्ट्रीय आय को बढ़ाने के साथ अप्रत्यक्ष रूप में मांग होगी। विदेशी पूंजी के बिना विकास की गति वांछित गति से बहुत मन्द होती है।

अल्पविकसित या विकासशील देशों में विदेशी पूंजी के महत्व को इस प्रकार से दिखलाया जा सकता है:

(1) पूंजी की कमी की समस्या का समाधान (Solution of the Problem of Lack of capital (Deficiency)): अल्पविकसित या विकासशील देशों में प्रायः पूंजी का अभाव पाया जाता है कारण कि ऐसे देशों में प्रायः लोगों की आय कम होती है जिससे बचत दर कम पायी जाती है। इसके फलस्वरूप देश में भी पूंजी दर की कमी पायी जाती है। इन देशों में घरेलू बचत दर का नीचा होने के कारण उनके आर्थिक विकास की आवश्यकता को पूरा करना सम्भव नहीं हो पाता। इस प्रकार, न्यायपूर्ण तीव्रता की दर से यदि वे विकास करना चाहते हैं तो विदेशी पूंजी की भूमिका बढ़ जाती है; और इसी की सहायता से देश के आर्थिक विकास को तीव्र करना सम्भव हो पाता है।

(2) तकनीकी ज्ञान और विशेषीकृत पूंजीगत साज-सामान (Technical Knowledge and specialised capital Equipment): अल्पविकसित या विकासशील देशों में पूंजी की कमी ही नहीं होती बल्कि ऐसे देशों में प्रशिक्षित कार्यकर्ता, तकनीकी ज्ञान और विशेषज्ञों की उपलब्धि एवं आधुनिक तकनीकी मशीनों और साज-सामान की भी कमी पायी जाती है। ऐसी स्थिति में विदेशी पूंजी इन देशों के तकनीकी एवं आधुनिक पिछड़ेपन की समस्या को दूर करती है, जो ऐसे देशों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है।

(3) विपरीत भुगतान संतुलन को ठीक करने में (To correct Adverse Balance of Payments): विदेशी पूंजी कमजोर आर्थिक विकास वाले देश के भुगतान संतुलन को सुदृढ़ करने में काफी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, ऐसे देश प्रायः अहितकर भुगतान संतुलन का शिकार होते हैं। आर्थिक विकास भुगतानों के संतुलन पर विपरीत असर डालता है कारण कि पूंजीगत वस्तुओं का भारी आयात, तकनीकी ज्ञान एवं कच्चे माल विकास कार्यक्रमों को जारी रखने के लिए आवश्यक होता है।

दूसरी ओर उत्पादन की ऊंची लागत और बाहरी मांग में कमी के कारण इन देशों का निर्यात धीमी गति से बढ़ता है। इस प्रकार, अल्पविकसित देशों के भुगतानों के संतुलन लगातार घाटे का बना रहेगा। इसी प्रकार विदेशी